सदीनामा

सोच में इज़ाफा

www.sadinama.in

ISSN : 2454-2121

वर्ष-19 ❍ अंक-6 ❍1 से 30 अप्रैल 2019❍ पृष्ठ-32 ❍ R.N.I. No. WBHIND/2000/1974 ❍मूल्य - 10 रूपये

ईश्वर बनने की फिराक में योगी सत्यम

भगवाधारी भूमाफिया योगी सत्यम की आलीशान कोठी

सरकारी जमीनों पर कब्जा कर खड़ा कर लिया अपना साम्राज्य

सम्पादकीय

उर्दू कोई धार्मिक भाषा नहीं है।

पूजा-पाठ करते समय जो श्लोक बोले जाते हैं या मंदिरों में पूजा की संस्कृत निष्ठ भाषावली को देखें तो यह लगता है संस्कृत सनातन धर्म की भाषा है। सनातन धर्म से निकले बौद्ध एवं जैन दोनों धर्मों ने संस्कृत की बजाय पाली भाषा को अपनाया दोनों पंथों के ज्यादातर ग्रंथ पाली भाषा में हैं।

उर्दू इस्लाम धर्म की भाषा नहीं है। पूरे मुल्क में मुसलमान उर्दू नहीं बोलते। उर्दू पत्रिका 'शायर' के सम्पादक इफ्तिखार इनाम सिद्दकीकी ने अपने एक इंटरव्यू में कहा-

''प्रश्न : इतनी बेहतरीन लिखाई के बावजूद उर्दू को सियासती जुबान में मुसलमानों की लैंग्वेज कहा जाता है तब आप कैसा महसूस करते हैं।-''

उत्तर :- उर्दू को मुसलमानों की जुबान कहना गलत है। उनकी जुबान तो अरबी है। उर्दू हिन्दुस्तान की जुबान है। यहाँ पार्टीशन के पहले उर्दू ही बोली जाती थी। अदालती कार्रवाई भी उर्दू में होती थी। जब कांस्टीट्यूशन बना तो हिन्दी-उर्दू को बराबर वोट मिले थे। पहले सद्र राजेन्द्र प्रसाद ने हिन्दी के हक में कास्टिंग वोट डाल दिया। उन्होंने ऐसा न किया होता तो उर्दू ही हिन्दुस्तान की खास जुबान होती-

पिछले महीने मेरा जाना मेरठ में हुआ वहाँ चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय के उर्दू विभाग अध्यक्ष कथाकार असलम जमशेदपुरी से मुलाकात हुई, उन्होंने हिन्दी पत्रिका शब्दसताब्दी जो हिन्दी-उर्दू साहित्यिक पत्रकारिता विशेषांक है, जिसके सम्पादक सुशील सीतापुरी हैं। इस पत्रिका के कई लेखों को ध्यान से पढ़ने से पता चला कि आजादी के पहले उर्दू-पत्रकारिता की शुरुआत किसी खास मजहब के लोगों ने नहीं की। भारत पाकिस्तान बंटवारे का एक आधार पंजाबी और बांग्ला भाषी क्षेत्र भी थे। आज बांग्लादेश में मुस्लिम जनसंख्या सर्वाधिक है। अत्यधिक गरीब और अधिक पैसेवाले हिन्दू ही बांग्लादेश में हैं पर उर्दू किसी भी स्कूल में नहीं पढ़ाई जाती उर्दू भाषियों की दूसरी-तीसरी पीढ़ी उर्दू को बांग्ला लिपि में लिखती है। शुरुआत बंगाल से करें तो उर्दू का पहला समाचार पत्र जानें जहाँनुमा (27 मार्च 1822) सम्पादक लाला सदासुख मिर्जापुरी, अखबार बिहार (पटना-1856), लाला बिन्दा प्रसाद, वीकली रिपोर्ट (1856) - मुंशी जे. जे. राम खैरख्वाहे हिन्द - 01 सितम्बर 1847 मिर्जापुर मास्टर रामचन्द्र द्वारा 1845, कुरान-उल-सैयदेत्त - पंडित धर्मनाराण भारका 1849, फ्वाईल-उल-शायकी, प्रभुदयाल। 'मुउद्दन अल कवानीन'- 1856, मेआर-उल शोअरा, - 1845, आगरा शिव नारायण 'आराम'

बकौल ओम प्रकाश नदीम (लखनऊ) - ''भाषा के दो बुनियादी तत्व होते हैं - लिपि तथा व्याकरण। हिन्दी और उर्दू की लिपियाँ बेशक अलग-अलग हैं। लेकिन दोनों व्याकरण लगभग एक जैसा है, लिहाजा तकनीकी नजिरये से देखा जाये तो हिन्दी और उर्दू दो अलग भाषाएं नहीं है। मुझे तो लगता है हिन्दी को फारसी लिपि में लिख दिया जाये तो उर्दू जैसी और उर्दू को 'देवनागरी में' लिख दिया जाये तो हिन्दी जैसी लगेगी। मसलन 'मुझे किताब समझ में नहीं आती' इसे फारसी लिपि में लिख दें तो ये उर्दू का जुलमा हो जायेगा।''-

1919-20 में लाहौर में लाता खुशहाल चन्द ने रोजनामा उर्दू 'मिलाप' शुरु किया। यही लाला खुशहाल चन्द आर्य समाज के महात्मा आनंद स्वामी कहलाये। उनके बेटे युद्धवीर और उनकी पत्नी सीता युद्धवीर ने 1947 के आसपास हैदराबाद की निजाम रियासत में 'मिलाप' नामक उर्दू रोजनामा जारी किया। (डॉ0 रउफ खैर)

उर्दू की इस विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका 'मखजन' का प्रभाव लाहौर से बनारस तक एक वर्ष में ही पहुँच गया । बनारस के मोहल्ला चेतगंज में रहने वाले कुलीन कायस्थ मुंशी गुलाब चन्द्र श्रीवास्तव ने 2 फरवरी 1902 को एक उर्दू साप्ताहिक ''आवाज-ए-खलक'' का प्रकाशन प्रारम्भ किया जो कई कारणों से उर्दू साहित्यिक पत्रिकारिता में अपना विशिष्ठ स्थान रखता है। इसके मुखपृष्ठ पर एक शेर छपता था। यह शेर इस पत्र में प्रकाशित सामग्री का मूल स्वर स्पष्ट करता है।''

मजनून निराले हैं मजा और ही कुछ है।
अखबार नहीं, नामे खुदा और ही कुछ है।।

सम्पादकीय

'चुपके चुपके रात दिन आंसू बहाना याद है' के शायर ने गंभीर गद्य के लिये 'उर्दू-ए-मुअल्लो' प्रकाशित कराया।

उर्दू पत्रिका 'जमाना' को 1903 में सम्पादक बाबू शिवव्रत लाल बर्मन और इसके बाद मुंशी दया नारायण निगम और उनके सुपुत्र नारायण निगम 1949 तक इसे निकालते रहें। इस अखबार के जिस व्यक्ति ने निकाला उनका नाम 25 वर्षों तक गोपनीय रहा। रियासत रामपुर के मुंशी राज बहादुर ही असली व्यक्ति थे। अखबार के पीछे मुंशी राजबहादुर के मरने के बाद ही उनका नाम दुनियां जान पायी। 1910 में ही इलाहाबाद की प्रसिद्ध इंडियन प्रेस से मुंशी नौवत राम नजर में 'अदीब' निकाला।

जाहिर है इतने सारे लिखने और पढ़ने वालों की एक बड़ी आबादी धर्म से परे रखकर उर्दू में काम कर रही थी। यह भी आश्चर्य है कि पंजाब हिन्दी पट्टी में उर्दू लोग मुकमलता तौर पर लिख पढ़ लेते थे। आखिर दक्षिण भारत के लोग उर्दू और हिन्दी अलग नहीं समझ पाते तथा सभी मुसलमान कुरान को अरबी में पढ़ते समझते हैं।

जीतेन्द्र जितांशु

jjitanshu@yahoo.com

ADVERTISEMENT RATE TARIFF

Advertisement Space	Rate
Back Cover Page (Colour)	: 12,000/-
Back Cover Page (Black & White)	: 10,000/-
Inside Cover Page	: 8,000/-
Black & White Advertisements (Half Page)	: 6,000/-
Coloured Advertisements (1/4 Page)	: 5,000/-
Black & White Advertisements (1/4 Page)	: 2,500/-
Bottom Strips (15cm × 5cm)	: 1,000/-
Front Cover Page (Only colour)	: 25,000/-

www.sadinama.in

पत्रिका का ताना-बाना

संपादक :

जीतेन्द्र जितांशु

9231845289

सम्पादकीय सलाहकार

यदुनाथ सेउटा

उप-सम्पादक

तितिक्षा

मिनाक्षी सांगानेरिया

संरक्षक मंडल :

आरती चक्रवर्ती

एच॰ विश्ववाणी

शिवेन्द्र मिश्र

राजेन्द्र कुमार रुइयां (अमेरिका)

डीटीपी, लेआउट तथा भूल-सुधार

राजेश्वर राय

रमेश कुमार कुम्हार

मारिया शमीम

कवर पेज कलर का चुनाव :

उषा सिंह, दिल्ली

पत्राचार का पता :

संपादक - सदीनामा

Purboyan, Ground Floor

38E, Prince Bakhtiar Sah Road

Kolkata - 700 033

West Bengal

E-Mail : sadinama2000@gmail.com

कविता

गजल (१)

क्या बनाऊँ आशियाँ
कम पड़ेगा ये जहाँ
बिजलियाँ ही बिजलियाँ
और मेरा घर यहाँ
एक थे हम दो यहाँ
कौन आया दर्मियाँ
ढूँढ़ते हो क्यों निशाँ
वो जमाने अब कहाँ
था जहाँ से वो बयाँ
अब नहीं हूँ मैं वहाँ

गजल (२)

घर में पूरी दुनिया रक्खूँ
लेकिन खुद को कितना रक्खूँ
तामीर नहीं हो पाया बेशक
नक्शा तो उस घर का रक्खूँ
मेरा अपना चेहरा है ना
क्यों फिर उस का चेहरा रक्खूँ
जाने कब तक आयेंगे वो
कब तक खुद को तनहा रक्खूँ
वो अपने पैमाने रक्खें
मैं अपना पैमाना रक्खूँ

एन-138,सेक्टर-25
नौएडा - 201301 (भारत)
मो॰ - 9810224571
E-mail : vigyanvrat@yahoo.com
vigyanvrat@gmail.com

घड़ी

घड़ी है कि घड़ी भर के लिए भी रूकती नहीं है।
भैया की मूंछ कभी झुकती नहीं है।।
क्यों कि भैया के मुँह पर मूछ ही नहीं है।
पगड़ी जो बाँधों तो मूंछे जरूर रखना,
मूंछो के बिना पगड़ी जंचती नहीं है।
दाढ़ी और मूंछों का फैशन समाप्त हो रहा,
पैंट और शर्ट पर उतनी फबती नहीं है।
घड़ी है कि घड़ी भर के लिए भी रुकती नहीं है।
घड़ी की बात कहै तो -
पहले की घड़ी अच्छी थी, जब हमारे पास तो क्या,
पूरे गाँव में भी घड़ी नहीं होती थी।
कभी भी स्कूल देर से नहीं पहुँचा।
कभी ट्रेन नहीं छूटी।
आधा घण्टे पहले ही स्टेशन पहुंच जाते थे,
और टिकट भी लेते थे।
जब मेरे घर में घड़ी आने की घड़ी अभी तो एक मुसीबत भी साथ लायी।
कभी-कभी तो गाँव के लोग जाढ़े की रात में जगाकर पूँछते थे,
''का टायम है, मोड़ा भओ है।''
अब क्या घड़ी आ गई है-
आज जब हम कमरे में, हर दीवाल पर, हर मेज पर,
पेन में, कलाई मैं, कम्प्यूटर में, मोबाइल में फोन। कार में
हर जगह घड़ी ही घड़ी है,
तब हम हमेशा घड़ी ही देखते रहते हैं
और फिर भी कहीं भी,
कहीं भी, घड़ी के हिसाब से नहीं पहुँचते हैं।
हमेशा देर हो जाती है।
क्या घड़ी आ गई है।
(1 घड़ी = 24 मिनट)

डॉ॰ ऋषि मुनि द्विवेदी, चैन्नै
rishimuni@redifmail.com

विविध

युवा कवि सरवर दिलकश की शोक सभा

गत रविवार को तिरंगा अगम काव्य संगम द्वारा तिरंगा से जुड़े रहे युवा कवि/शायर मरहूम दिलकश की याद में शोक सभा का आयोजन काशीपुर स्थित आयुस भवन सभागार में आदर्श युवक संघ एवं सदीनामा के तत्वावधान में श्री बादल हेम्ब्रम और मशहूर शायर जनाब हलीम साबीर साहब की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में योगेन्द्र शुक्ल 'सुमन जी,' जितेन्द्र जितांशु एवं ज़मीर युसूफ साहब उपस्थित थे। संचालन डॉ॰ जमील हैदर 'शाद' साहब ने किया।

इस अवसर पर अपनी कविता एवं संस्मरण द्वारा उपस्थित कवियों/शायरों तथा उनको चाहने वाले अन्य गणमान्य लोगों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

माहौल बहुत ही गमगीन था क्योंकि इतनी कम उम्र में एक होनहार कवि का दुनिया से चले जाना सबके लिए दुखद होता है। श्रद्धा सुमन अर्पित करने वाले थे -

दिनेश चन्द्र प्रसाद 'दिनेश', सहर मजीदि, वदूद आलम आफाकी, मुस्लिम नवाज, आरती सिंह, जीवन सिंह, रिजवान गोरखपुरी, रणजीत भारती, विकास अत्रि, इकबाल अकीब, चन्द्रिका प्रसाद पांडे 'अनुरागी', अनील उपाध्याय, हीरालाल साव, अज्मत अंसारी, जगमोहन सिंह 'खोकर', मीनाक्षी सांगानेरिया, रिन्कू राजभर, जतिब हयाल, प्रदीप कुमार धानुक, अशरफ याकुबी, रौनक अफरोज, सलमा सहर, विश्वजीत शर्मा, फौजिया अख्तर, युसूफ अख्तर, शमीम सागर, सोहेल खान सोहेल, मो॰ नसीम अकबर, मुज्तर इफ्तेखारी, नूर अशरफी एवं अन्य अनेकों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

संयोजक शम्भू लाल जालान 'निराला' ने अन्त में धन्यवाद ज्ञापित दिया।

पांडुलिपि प्रकाशन योजना-२०१९

कवि दीपक अरोड़ा की स्मृति में बोधि प्रकाशन द्वारा शुरु की गई पांडुलिपि प्रकाशन योजना के चौथे वर्ष (वर्ष 2019) के लिए पांडुलिपियाँ प्राप्त करने की अंतिम तिथि 30 अप्रैल 2019 है। इच्छुक रचनाकार मित्र कृपया ध्यान दें।

इस योजना के तहत पहले वर्ष में पांच तथा योजना के दूसरे तथा तीसरे वर्ष दो - दो पुस्तकों का चयन किया गया - जिनका प्रकाशन हो चुका है। योजना के इस वर्ष में भी दो पांडुलिपियां प्रकाशन हेतु चयनित किये जाने का प्रस्ताव है। पांडुलिपि भेजने से पूर्व इस पोस्ट में पहला कमेंट पूरा पढ़ने का अनुरोध है, ताकि आवश्यक जानकारी मिल जाये।

सदीनामा
फार्म-4
(देखिए नियम आठ)

1. प्रकाशन स्थल	:	H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India
2. प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3. मुद्रक व प्रकाशक	:	पुष्प मित्र शर्मा
4. सम्पादक का नाम	:	जितेन्द्र जितांशु
5. क्या भारतीय नागरिक हैं	:	पता
	:	H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो मालिक हैं तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार हों।		पुष्प मित्र शर्मा H-5, Govt.Qtrs. Budge Budge (बजबज), Kolkata-137, 24 Pgs. (S), W.B. India

मैं, सोनिया शर्मा एतद्द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार उपरोक्त विवरण सत्य है।

प्रकाशक के हस्ताक्षर

दिनांक : 01-03-2018 सोनिया शर्मा

कवर स्टोरी

खुद को ईश्वर की श्रेणी में बताता है भगवाधारी भू माफिया योगी सत्यम

मामला फूलपुर तहसील अन्तर्गत गाँव 'कोहना झूसी' का है। योगी सत्यम के नाम से भगवा चोले में छिपा एक ऐसा तथाकथित भूमाफिया सरकारी जमीनों को लीलता जा रहा है जिस पर सरकार स्वयं ही भूमाफिया का ठप्पा लग चुकी है। इस योगी पर सराय इनायत और झूंसी में लगभग को दर्जन मामले दर्ज हैं। इस कथित योगी पर अवैध तरीके से जमीन कब्जे से लेकर स्टाम्प शुल्क की चोरी तक के मामले पंजीकृत है। इसके अलावा मारपीट, गाली-गलौच और सरकारी काम में बाधा डालने समेत हाथापाई तक के मामले पंजीकृत हैं।

सत्य नारायण सिंह सिर्फ योगी सत्यम का यह आतंक अभी से नहीं बल्कि साढ़े तीन दशकों से जारी है। स्थानीय निवासियों की मानें तो 1983 में सत्य नारायण सिंह के पास टूटी साइकिल हुआ करती थी, आज उसके पास शानदार लग्जरी कारों का काफिला मौजूद है। हालांकि यह सामने नहीं आ सका है कि आखिर यह कारें किसकी है और किसके नाम पर है? लेकिन लग्जरी कारों में इस कथित योगी को आते-जाते कहीं भी देखा जा सकता है? उत्तर-प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री श्रीपति मिश्रा के कार्यकाल में अपनी जड़े जमाने वाला योगी सत्यम पूर्व मुख्यमंत्री वीर बहादुर सिंह, नारायण दत्त तिवारी, मुलायम सिंह यादव, मायावती और अखिलेश यादव के कार्यकाल में अपने साम्राज्य का अनैतिक विस्तार करता रहा, लेकिन किसी सरकार ने योगी सत्यम के अनैतिक विस्तार को चुनौती देने की कोशिश नहीं की। यूपी के वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के कार्यकाल में भी भगवाधारी योगी सत्यम का इकबाल स्थानीय प्राशसन पर हावी है। यह दीगर बात है कि इलाहाबाद विकास प्राधिकरण इस योगी के अनैतिक साम्राज्य पर लगातार आंखें गड़ाए बैठा रहा। जब कभी उसे मौका मिला उसने योगी सत्यम के इकबाल को चुनौती देने में कोई कसर नहीं छोड़ी। इलाहाबाद विकास प्राधिकरण के अधिकारी दबी जुबान से यहाँ तक कहते हैं कि यदि शासन और नेता-मंत्री हस्तक्षेप न तो भगवा वस्त्र के पीछे छिपे कथित भूमाफिया योगी सत्यम का अनैतिक साम्राज्य काफी पहले समाप्त हो गया होता।

वैसे तो साढे तीन दशक के दौरान योगी सत्यम ने अपने साम्राज्य को लगातार बढाया लेकिन खासतौर से जब-जब सूबे में सपा की सरकार आयी योगी सत्यम की हैसियत सुरसा के मुंह की तरह बढ़ती गयी। बेखौफ सरकारी और निजी जमीनों पर कब्जा होता रहा और स्थानीय प्रशासन महज मूकदर्शक बना रहा। मुलायम सरकार के कार्यकाल में जमीनों का विस्तार हुआ तो अखिलेश का कार्यकाल भी योगी सत्यम के प्रभाव से अछूता नहीं रह सका। एक समय ऐसा भी आया था जब तत्कालीन युवा मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने योगी सत्यम के खिलाफ चल रही जाँचों के आधार पर उन्हें सबक सिखाने की बात कही थी। कहा जाता है कि हालात बदलते देर नहीं लगती। योगी सत्यम से त्रस्त लोग ठीक से खुशियाँ मना पाते इससे पहले ही योगी सत्यम के कुछ नौकरशाह शार्गिदों ने तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव के ऐसे कान भरे के यि योगी सत्यम के खिलाफ कार्रवाई करने के बजाए उसके चरणों में ही नतमस्तक हो गए।

वर्ष 2012 में सूबे में जब तत्कालीन अखिलेश सरकार ने शपथ ली तो यह लगने लगा था कि युवा सोच वाला मुख्यमंत्री आडम्बरों से दूर योगी सत्यम के बहुबल को तो चुनौती देगा ही साथ ही उन अधिकारियों के खिलाफ भी कार्रवाई करेगा, जिन्होंने योगी सत्यम को अवैध कब्जा करने के मामले में खुलकर मदद की। अखिलेश सरकार एक्शन में आती इससे पहले भगवाधारी योगी सत्यम फुल मोड़ कर एक्शन में आ चुके थे। साम-दाम-दण्ड-भेद की नीति ने ऐसा कमाल दिखाया कि अखिलेश सरकार के जिम्मेदार अधिकारी चारों खाने चित्त नजर आए। योगी सत्यम के इस काम को अन्जाम देने वालों में वे अधिकारी शामिल थे जो आश्रय में ऐश-ओ-आराम का भोग करते आए हैं। आश्रम में ऐश-ओ-आराम का भोग करने वाले अधिकारियों ने तत्वकालीन मुख्यमंत्री अखिलेख यादव के कानों में योगी सत्यम का न जाने ऐसा कौन सा मंत्र फूंका कि जिसे तत्कालीन मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने बेशकिमती सरकारी जमीन खाली करवाने के लिए एंडीए प्रशासन को खुली छूट दे रखी थी, बड़ी मुख्यमंत्री कथित भूमाफिया योगी सत्यम के चरणों में नतमस्तक हो गया।